“मुक्ति पर्व दिवस गीत”

जगत माँ अवतार गुरू के बलिहारी हो जाये,
उनके ही कर्मो से आओ जीवन को महकाये (आलाप)

उन पीरों को, पीरो को भुलसे भी ना भुलाये (२)
श्रद्धांजली हम अर्पित कर पाये (२)
श्रद्धा के फूल चरणों में आओ चढाए
उन पीरों को.....॥धृ॥

खुद मुक्ति थे, मुक्ति वो करते थे सबको
मुक्त होने की युक्ति, सिखाते थे सबको(२)
ये ठाना था-२ मन में उन्होंने, तन की आहुती दे दी जिन्होने (२)
जान जाये पर मिशन पे आँच न आये, उन पीरों को.....॥१॥

चाचा प्रताप जी, ऋषी व्यास जी प्यारे
प्रभु भक्ति में चमके वो बनके सितारे
जग में अमर है-२ भक्त वो सारे, गुरूभक्ति में खुद को गुजारे,
उनके जैसा गुरूसिख, उन पीरों को.....॥२॥

जो खुद को ही किया प्रभु के हवाले
उन भक्तों के प्रभु बने रखवाले
राखे मारे हाथ है तुम्हारे ये कहके बढे आज सारे
गुरू के प्रेम में, खुदी को उन्होंने मिटायें ॥३॥

(तर्जः बुद्ध गौतम का, गौतम का संदेश हम जग को सुनाये.....)